

प्रभु उपासना से हम पवित्र बनें



मानव विनाशक वृत्तियों का दास बन जाता है किन्तु मन्त्र इन वृत्तियों से बचने की प्रार्थना का उपदेश करते हुए परमपिता से प्रार्थना करता है कि हम एसी प्रवृत्तियों का नाश कर स्वयं को सुरक्षित करें। हमारे हृदय में दैवीय वृत्तियां आवें तथा हे प्रभु! आप के समीप निवास कर हम पवित्र बनें। इस बात को ही यह मन्त्र उपदेश कर रहा है :-

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः ।
देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥४॥

इस मन्त्र में पाँच प्रकार के उपदेश दिए गए हैं-

१. हमारी अदान वृत्ति का नाश हो :-

हे परमपूज्य प्रभो! आप हमारे अन्दर की राक्षसी प्रवृत्तियों को, जो हमारा नाश करने वाली आदतें हैं, इन सब प्रकार की दुष्ट वृत्तियों का आप ही नाश करने वाले हैं। इन बुरी आदतों से आप ही हमें बचाने वाले हैं। आप के सहयोग के परिणाम स्वरूप हम इन बुराईयों से बच पाते हैं। इसलिए आप हमें इन राक्षसी प्रवृत्तियों से इन अदान की वृत्तियों से, दूसरों का सहयोग करने से रहित हमारी आदतों का सुधार कर इन बुराईयों से हमें बचाते हुए इन्हें हम से दूर कर दीजिए, इन का नाश कर दीजिए, इनका संहार कर दीजिए।

जब हमारे अन्दर अदान की वृत्तियां आती हैं तो हम विभिन्न प्रकार के भोगों में आसक्त हो जाते हैं, इस कारण हम अनेक बार हिंसक भी हो जाते हैं। आप हम पर कृपा करें तथा इन अदान की वृत्तियों को हम से दूर कीजिए, हमें दानशील बना दीजिए। जिस अदान व राक्षसी वृत्ति से हम हिंसक हो जाते हैं, प्रभु! आप उस पर हिंसा कीजिए अर्थात् इन बुरी वृत्तियों का नाश कर हमारी रक्षा कीजिए। ये सब बुरी वृत्तियां हमारा नाश करने को कटिबद्ध हैं, हर हालत में, हर अवस्था में हमारा नाश करना चाहती हैं। आप की जब हमारे पर कृपा होगी, दया होगी, तब ही हम इन का विनाश करने में सक्षम हो पावेंगे। आप की दया होगी तब ही हम इन बुरी वृत्तियों को नष्ट कर स्वयं को रक्षित कर सकेंगे, अपनी रक्षा कर सकेंगे। हम दिव्य जीवन का आरम्भ करना चाहते हैं किन्तु यह भोगवाद हमें दिव्य जीवन की ओर जाने ही नहीं देते। आप कृपा कर हमें इस भोगवाद से बचावें तथा हमें दिव्य जीवन आरम्भ करने का मार्ग बतावें, हमारे लिए दिव्य जीवन पाने का मार्ग प्रशस्त करें।

२. प्रभु कृपा से दिव्यगुण मिलते हैं :-

जीव को दिव्यगुण देने वाले वह परमपिता परमात्मा ही हैं। वह प्रभु ही हमें अत्यधिक व भारी संख्या में दिव्य गुण देने वाले हैं। यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि हमें जिन दिव्य गुणों की आवश्यकता है, यथा हमने स्वयं को सुबुद्धि-युक्त करना है। यह सुबुद्धि तब ही आती है, जब हम उग्र हो जाते हैं, अत्याचारों का मुकाबला करने की, प्रतिरोध करने की शक्ति के स्वामी हो जाते हैं। हम दिव्य तब बनते हैं जब हमारे में उदात्त भावनाएं आ जाती हैं। हम स्वयं को उत्तम बना कर दूसरों को भी उत्तम बनाने का यत्न करते हैं, प्रयास करते हैं। जब हम ज्ञानी बन कर अतुल ज्ञान का भण्डार अपने अन्दर संकलित कर लेते हैं तथा दूसरों में यह ज्ञान बांट कर उन्हें भी ज्ञानी बनाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार हम सब प्रकार के तत्वों के स्वामी बन कर तत्त्वद्रष्टा हो कर ऋषि के आसन पर आसीन हो जाते हैं, सब प्रकार की सद्बुद्धियों के स्वामी हो जाते हैं।

३. प्रभु चरणों में सब मलिनताएं मर जाती है

हे प्रभो! एक आप ही हैं, जो हमारे जीवनो को शुद्ध व पवित्र बनाते हो। हमारे जीवनो में जितनी भी शुद्धता व पवित्रता है, वह आप के ही आशीर्वाद के कारण है, आप की ही दया के कारण है, आप की ही कृपा के कारण है। आप ही हमें अधिकाधिक शुद्ध व पवित्र बनाते हो। जब हम आपके चरणों में आते हैं तो हमारी सब मलिनताएं दग्ध हो जाती हैं, नष्ट हो जाती हैं, जल कर दूर हो जाती हैं। जब हम आप की उपासना करते हैं, आप के समीप आसन लगाकर बैठते हैं, आप की निकटता को पाने में सफल होते हैं तो हमारा जीवन आप की निकटता रूपि जल से एक प्रकार से धुल जाता है तथा हम शुद्ध ओर पवित्र हो जाते हैं।

४. आप हमें देवीय शस्य से भर देते हो :-

प्रभो! जब आप हमारे जीवन को शुद्ध कर देते हो, हमारे जीवन को पवित्र कर देते हो, तो बुराइयाँ निकलने से हमारे अन्दर बहुत सा स्थान रिक्त हो जाता है। आप जानते हो कि रिक्त स्थान तो कहीं रह ही नहीं सकता, जहां भी कुछ रिक्तता आती है तो आप कुछ न कुछ उस स्थान पर रख कर उसे भरने का कार्य भी करते हो। जब आप ने हमारे जीवन की सब बुराइयों को निकाल बाहर कर दिया तो इस रिक्तता को पूरित करने के लिए आप उस शुद्ध हुए शरीर में, दिव्य गुणों के बीज डाल देते हो। दिव्य गुणों की खेती कर देते हो। इन बीजों से हमारे अन्दर दिव्य गुणों के अंकुर फूटते हैं, नन्हें-नन्हें पौधे निकलते हैं। यह अंकुर दैवीय सम्पदा की ओर इंगित करने वाले होते हैं, हमें इंगित करते हैं कि हम किसी दैवीय सम्पदा के भण्डारी बनने वाले हैं। इस प्रकार हम सद्गुण रूपी देवीय सम्पदा के स्वामी बन इस सम्पदा से परिपूर्ण हो जाते हैं।

५. प्रभु ज्ञान का दीपक पा कर देव बनते हैं :-

हे पिता! इस जगत् में जितने भी समझदार व सूझवान लोग हैं, आप उन से प्रीति-पूर्वक सेवन किये जाते हो। ऐसे लोग प्रतिक्षण आप की ही प्रार्थना करते हैं, आप की ही सेवा करते हैं। इस प्रकार के ज्ञान से भरपूर लोग ही देवता कहलाते हैं। अतः आप इन देवताओं के द्वारा बार-बार पुकारे जाते हो, इन देवताओं के द्वारा बार-बार याद किये जाते हो, यह लोग बार-बार आप के समीप आते हैं और आप की समीपता से देव बन जाते हैं।

देव कैसे बनते हैं? मानव को देव की श्रेणी प्राप्त करने का साधन है आप की निकटता। आपकी समीपता

पाए बिना कोई देव नहीं बन सकता। अतः आप का उपसन, आप के निकट आसन लगा कर हम देव बन जाते हैं। जब हम आप के समीप आसन लगा कर बैठ जाते हैं तो हमारे अन्दर के काम आदि दुष्ट विचारों का दहन हो जाता है, हनन हो जाता है, नाश हो जाता है, यह सब बुराईयां जल कर नष्ट हो जाती हैं, राख बन जाती हैं। यह काम रूप व्रत्र अर्थात् यह हमारी आंखों पर पर्दा डालने वाले जितने भी दोष हैं, इन सब का आप विनाश कर देते हो तथा इस दोषों के विनाश के पश्चात् हम उपासकों का हृदय ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है, जगमगाने लगता है, आलोकित हो जाता है। इस ज्ञान के प्रकाश को पा कर ही हम देव तुल्य बन जाते हैं।

डॉ. अशोक आर्य

पाकेट १/६१ रामप्रस्थ ग्रीन से.७ वैशाली

२०१०१२ गाजियाबाद उ.प्र.भारत

दूरभाष ९३५ ४८४५ ४२६ व्हाट्स एप्प ९७१८५२८०६८ e Mail ashokarya1944@rediffmail.com